परमेश्वर की
ओर रास्ता

©2014 World Missionary Press, Inc. Cover art, Edwin B. Wallace.

All scriptures are taken from the Hindi Bible with permission from the Bible Society of India.

परमेश्वर ने हमारा संसार ओर सभी जीवितों को बनाया

''आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की'' - उत्पत्ति 1:1

''क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हो अथवा पृथ्वी की .....'' -कुलुस्सियों 1:16

''यहोवा जो आकाश और पृथ्वी का कर्ता है, उसकी ओर से तुम आशीष पाए हो । स्वर्ग तो यहोवा का है, परन्तु पृथ्वी उस ने मनुष्यों को दी है।'' -भजन संहिता 115:15,16

जब परमेश्वर ने इस भूमि को मनुष्य को दिया तो यह परिपूर्ण थी। इस पुस्तक को पढ कर जाने आगे क्या हुआ।

परमेश्वर ने हमे बनाया

‘‘फिर परमेश्वर ने कहा, ‘हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं.....सारी पृथ्वी पर..... अधिकार रखे।’’

-उत्पत्ति 1:26

‘‘और यहोवा परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूंक दियाः और आदम जीविता प्राणी बन गया।’’

- उत्पत्ति 2:7

‘फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा, आदम का अकेला रहना अच्छा नहींः मैं इसके लिये ऐसा सहायक बनाऊंगा.....‘तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को भारी नीन्द में डाल दिया, और जब वह सो गया तब उस ने उसकी एक पसली निकालकर संती मांस भर दिया। और यहोवा परमेश्वर ने उस पसली को जो उस ने आदम में से निकाली थी, स्त्री बना दिया, और उसको आदम के पास ले आया।’’

- उत्पत्ति 2:18,21,22

आदम और हव्वा ने आज्ञा का पालन नहीं किया

हमें कभी भी शैतान की आवाज़ नहीं सुननी चाहिए

“जब यहोवा परमेश्वर ने आदम को लेकर अदन की वाटिका में रख दिया, फिर वह उस में काम करे और उसकी रक्षा करे, तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को यह आज्ञा दी, कि तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता हैः पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खानाः क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाए उसी दिन अवश्य मर जाएगा।” -उत्पत्ति 2:15-17

सर्प ने जो दुष्ट या शैतान भी कहलाता है परमेश्वर की आज्ञा को चुनौती दी और झूठ बोला।

“तब सर्प ने स्त्री से कहा, तुम निश्चय न मरोगे।’ सो जब स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने में अच्छा, और देखने में मनभाऊ, और बुद्धि देने के चाहने योग्य भी है, तब उस ने उस में से तोड़कर खायाः और अपने पति को भी दिया, और उस ने भी खाया। -उत्पत्ति 3:4,6

आदम और हव्वा और अधिक उस वाटिका में नहीं रह सके

“तब यहोवा परमेश्वर ने उसको अदन की वाटिका में से निकाल दिया कि वह उस भूमि पर खेती करे जिस में से वह बनाया गया था। और जीवन के वृक्ष के मार्ग का पहरा देने के लिये.....करूबों को.....ज्वालामय तलवार को भी नियुक्त कर दिया।”

- उत्पत्ति 3:23-24

यह मानव जाति के लिये एक दुःख का दिन था जब आदम और हव्वा ने पाप किया

“.....एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई.....” - रोमियों 5:12

कुछ याद रखने के लिये

हर मनुष्य पाप स्वभाव में उत्पन्न हुआ और उसे एक दिन मृत्यु प्राप्त होगी क्योंकि मृत्यु पाप के द्वारा आई (दुबारा रोमियों 5:12 पढ़िये)

प्रभु ने अपनी पद्धति के अनुसार हमें पाप से उबारने के लिये अपने इकलौते पुत्र को भेजा

''वह पुत्र जनेगी और तू उसका नाम यीशु रखना, क्योंकि वह अपने लोगों को उनके पापों से उद्धार करेगा।''

-मत्ती 1:21

मानव राशि में प्रवेश करने के लिये परमेश्वर के पुत्र ने मनुष्यों का रूप धारण किया।

''क्योंकि उसमें (यीशु मसीह) ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है।''

-कुलुस्सियों 2:9

‘‘आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था, ...और वचन देहधारी हुआ और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया.....’’ -यूहन्ना 1:1,14

‘‘यह सब कुछ इसलिये हुआ कि जो वचन प्रभु ने भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा थाःवह पूरा हो। कि, देखो एक कुंवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी और उसका नाम इम्मानुएल रखा जायेगा जिसका अर्थ यह है ‘‘परमेश्वर हमारे साथ।’’ -मत्ती 1:22,23

‘‘क्योंकि हमारे लिये एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है, और प्रभुता उसके कांधे पर होगी, और उसका नाम अदभुत युक्ति करनेवाला पराक्रमी परमेश्वर , अनन्तकाल का पिता, और शांति का राजकुमार रखा जायेगा।’’ -यशायाह 9:6

यीशु मसीह हमारा सच्चा बलिदान

“जो पाप से अज्ञात था.....” - 2 कुरिन्थियों 5:21

“न तो उसने पाप किया.....”

-1 पतरस 2:22

मनुष्य का कोई भी चढ़ावा उसके पाप नहीं मिटा सकता है।

“क्योंकि अनहोना है, कि बैलों और बकरों का लोहू पापों को दूर करें” - इब्रानियों 10:4

मसीह परमेश्वर का मेम्ना है। “देखो यह परमेश्वर का मेम्ना है जो जगत का पाप उठा ले जाता है।”

-यूहन्ना 1:29

दुष्ट मनुष्य मसीह से घृणा करते थे इसलिये उन्होंने उसे लकड़ी के क्रूस पर ठोंक दिया, परन्तु यह परमेश्वर की इच्छा के अनुसार था। मसीह जिन्होंने स्वयं अपने को इसके लिये अर्पित किया कि आपका और मेरा जीवन अपने पापों से बचाया जा सके, यीशु ने कहा, "कोई उसे मुझ से छीनता नहीं, वरन मै उसे आप ही देता हूः मुझे उसके देने का भी अधिकार है, और उसे फिर लेने का भी अधिकार है...." - यूहन्ना 10:18

हम प्रभु के मेम्ने के रक्त के द्वारा छुड़ाये गये हैं

"....तुम्हारा छुटकारा चांदी सोने अर्थात नाशमान वास्तुवों के द्वारा नहीं हुआ, पर निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने अर्थात मसीह के बहुमूल्य लोहू के द्वारा हुआ।"
-पतरस 1:18,19

दूसरा कोई बलिदान पाप नहीं मिटा सकता है

"उसी इच्छा से हम यीशु मसीह की देह के एक ही बार बलिदान चढ़ाये जाने के द्वारा पवित्र किये गये है।"
-इब्रनियों 10:10

12 “.....उसके लोहू के कारण हम धर्मी ठहरे, तो उसके क्रोध से क्यों न बचेंगे ।”

“प्रभु जब आप अपने राज्य में आएं तो
मेरी भी सुधी लेना ।”

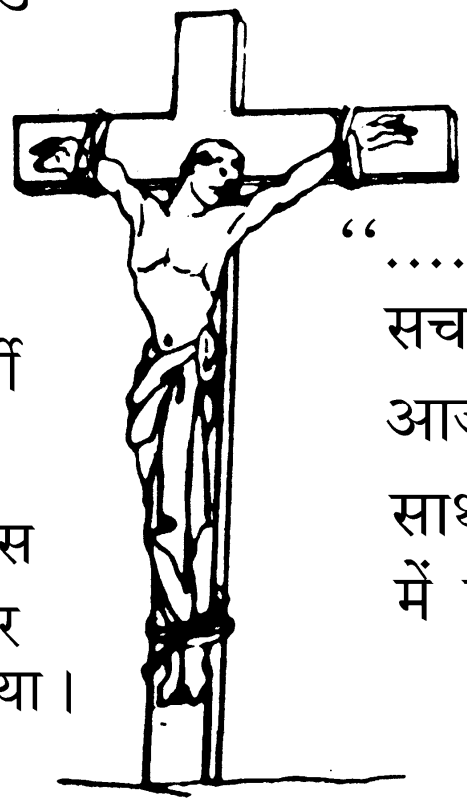

इस कुकर्मी ने यीशु पर विश्वास किया और बचाया गया।

“.....मै तुझ से सच कहता हूँ कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्ग लोक में होगा ।”
-लूका 23:43

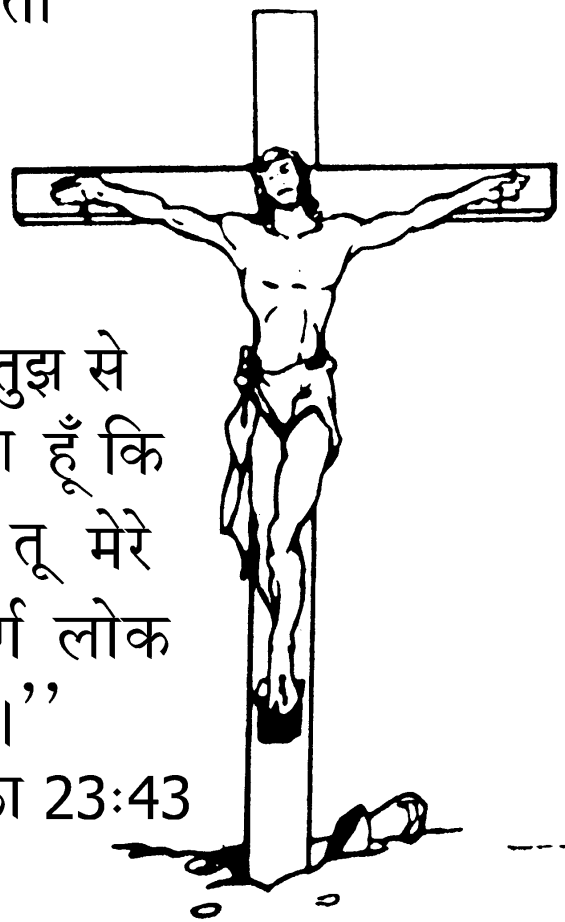

इस कुकर्मी ने यीशु पर विश्वास नहीं किया इसलिये वो बचाया न जा सका।

“जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।” -रोमियों 5:8

“वे जो ईश्वर के पुत्र पर विश्वास रखते है,
जीवन पायेंगे क्योंकि परमेश्वर ने
जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना
एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर
विश्वास करे, वह नाश न हो,
परन्तु अनन्त जीवन पाए।”

-यूहन्ना 3:16

“उसी ने हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया। जिस में हमें छुटकारा अर्थात पापों की क्षमा प्राप्त होती है।”

-कुलुस्सियों 1:13,14

वह जी उठा!

“स्वर्गदूत ने स्त्रियों से कहा, कि तुम मत डरोः मै जानता हूँ कि तुम यीशु को जो क्रूस पर चढ़ाया गया था ढूंढती हो। वह यहां नहीं है, परन्तु अपने वचन के अनुसार जी उठा हैः आओ, यह स्थान देखो, जहां प्रभु पड़ा था।”

- मत्ती 28:5,6

‘‘मैं मर गया था, और अब देखः मैं युगानुयुग जीवता हूँः और मृत्यु और अधोलोक की कुंजियां मेरे ही पास है।’’ -प्रकाशितवाक्य 1:18

‘‘.....कि मैं जीवित हूँ, तुम भी जीवित रहोगे।’’ -यूहन्ना 14:19

क्योंकि मसीह ने मृत्यु पर विजय पा ली है और मृत्यु की कुंजी उसके पास है, इसलिये हमें अब मृत्यु से भय नहीं।

‘जिस समय मुझे डर लगेगा, मैं तुझ पर भरोसा रखूंगा।’’ -भजन संहिता 56:3

(परमेश्वर के वायदों को पृष्ठ 46 पर देखें)

मसीह आपको बचा सकते है और वे आपके लिये प्रार्थना करते है

‘‘पर यह युगानुयुग रहता है .....वह उनका पूरा उद्धार कर सकता है, क्योंकि वह उन के लिये विनती करने को सर्वदा जीवित है।’’ - इब्रानियों 7:24,25

आप और मैं नित्य जीवन पा सकते है

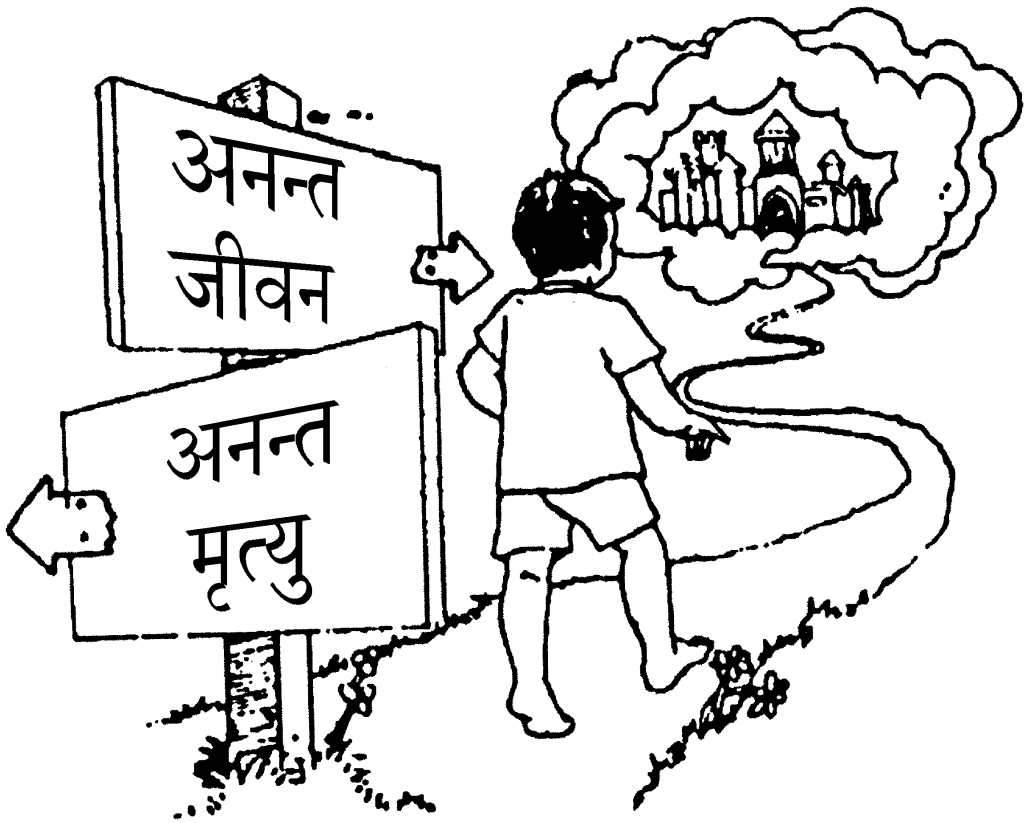

आप कौन सा मार्ग चुन रहे है?

परमेश्वर के साथ अनन्त जीवन बीताने का एकमात्र मार्ग केवल यीशु मसीह ही है।

शैतान का मार्ग नित्य मृत्यु की ओर जाता है।

इस बालक ने नित्य जीवन का सही मार्ग चुना है।

‘‘.....आज चुन लो कि तुम किस की सेवा करोगे.....’’-यहोशू 24:15

‘‘.....इललिये तू जीवन ही को अपना ले, कि तू और तेरा वंश जीवित रहे।’’
-व्यवस्थाविवरण 30:19

यीशु अनन्त जीवन की ओर का मार्ग है

‘‘और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं: क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिस के द्वारा हम उद्धार पा सकें।’’
- प्रेरितों के काम 4:12

‘‘मैं ही यहोवा हूँ और मुझे छोड़ कोई उद्धारकर्ता नहीं’’ -यशायाह 43:11

यदि हम नित्य जीवन

चाहते हैं तो हम मसीह को क्यों चुने?

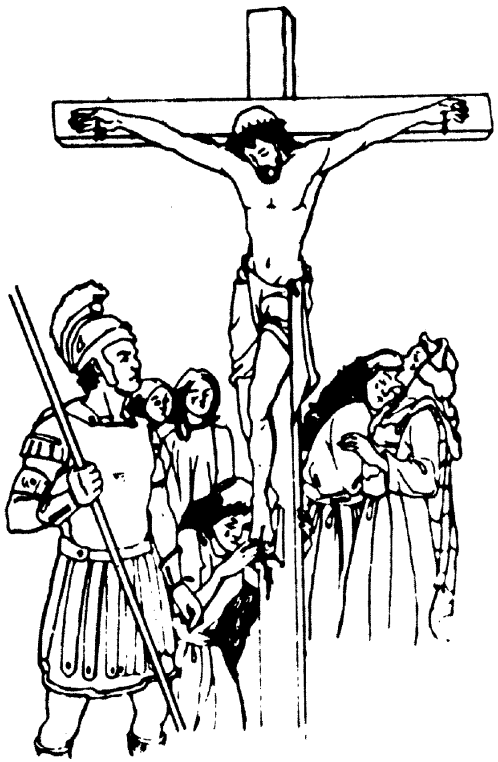

1. मसीह ही है जो उद्देश्य से आए ।

“.....मैं इसलिये आया कि वे जीवन पाएं.....”

-यूहन्ना 10:10

2. मसीह ही है जिन्होंने हमसे प्रेम किया और हमारे लिये मरे ।

“.....परमेश्वर के पुत्र.....मुझ से प्रेम किया, और मेरे लिये अपने आप को दे दिया ।” - गलतियों 2:20

मसीह ने लहू और मांस वाले मनुष्य का रूप ग्रहण किया, “इसलिये जब कि लड़के मांस और लोहू के भागी हैं तो

वह आप भी उन के समान ही उन का सहभागी हो गयाः ताकि मृत्यु के द्वारा उसे जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी, अर्थात् शैतान को निकम्मा कर दे । और जितने मृत्यु के भय के मारे जीवन भर दासत्व में फंसे थे, उन्हें छुड़ा ले ।''

-इब्रानियों 2:14,15

3. सिर्फ मसीह का रक्त हमें पापों से छुटकारा दे सकता है ।

''.....क्योंकि प्राण के कारण लोहू ही से प्रायश्चित होता है ।''

-लैव्यव्यवस्था 17:11

''.....यीशु का लोहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है ।'' -1यूहन्ना 1:7

''जिस में हमें छुटकारा अर्थात् पापों की क्षमा प्राप्त होती हैं ।''

-कुलुस्सियों 1:14

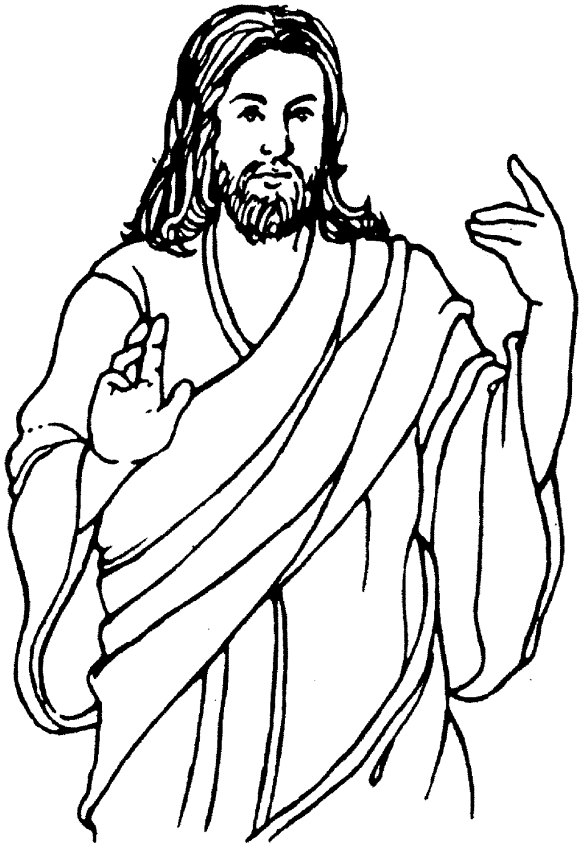

4. मसीह ही है जो मृतकों में से जी उठे ।

‘‘क्योंकि यह जानते है, कि मसीह मरे हुओं में सी जी उठकर फिर मरने का नहीं, उस पर मृत्यु की प्रभुता नहीं होने की ।’’ - रोमियों 6:9

‘‘और वह इस निमित्त सब के लिये मरा, कि जो जीवित है, वे आगे को अपने लिये न जीएं परन्तु उसके लिये जो उन के लिये मरा और फिर जी उठा ।’’ -2 कुरिन्थियों 5:15

यीशु ने कहा, ‘‘- इसलिये कि मैं जीवित हूँ, तुम भी जीवित रहोगे ।’’ -यूहन्ना 14:19

जिससे हम नित्य जीवन प्राप्त कर सकें।

‘‘मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है।’’ - कुलुस्सियों 1:27

‘‘और यदि उसी का आत्मा जिस ने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया तुम में बसा हुआ हैः तो जिस ने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया, वह तुम्हारी मरनहार देहों को भी अपने आत्मा के द्वारा जो तुम में बसा हुआ है जिलाएगा।’’
- रोमियों 8:11

विश्वास कीजिये कि आपमें मसीह की आत्मा निवास करती है।

‘‘.....यदि किसी में मसीह की आत्मा नहीं तो वह उसका जन नहीं।’’
-रोमियों 8:9

आप अनन्त जीवन किस प्रकार प्राप्त कर सकते है

पेज 24 के बिन्दुओं पर ध्यान दीजिए,

‘‘बच्चा भी अपने कामों से पहचाना जाता है.....’’

-नितिवचन 20:11

‘‘यीशु मुझसे प्रेम करते है, यह मैं जानता हूँ, बाइबल भी यही कहती है।’’

यीशु सब बच्चों से प्यार करते है

‘‘यीशु ने बच्चों को पास बुलाकर कहा, बालकों को मेरे पास आने दो, और उन्हें मना न करोः क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों ही का है।’’ - लूका 18:16

‘‘ऐसा ही तुम्हारे पिता की जो स्वर्ग में है यह इच्छा नहीं, कि इन छोटों में से एक भी नाश हो।’’ - मत्ती 18:14

यह विषय नहीं है कि आप कौन है और कहाँ रहते है, यीशु आपको प्रेम करते है वे आपके लिये मरे, यीशु भी आपका प्रेम चाहते है, आप अपना प्रेम यीशु की आज्ञा मानकर उसके प्रति प्रदर्शित कर सकते है।

‘‘यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।’’ -यूहन्ना 14:15

किस प्रकार आप परमेश्वर का मार्ग प्राप्त कर सकते है

1. स्वीकार करिये कि आप एक पापी मनुष्य है (परमेश्वर की आज्ञा न मानकर)।

‘‘इसलिये कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित है ।’’
- रोमियों 3:23

2. यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के पास आईये ।

‘‘क्योंकि परमेश्वर एक ही हैः और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात यीशु मसीह जो मनुष्य है ।’’ -1 तीमुथियुस 2:5

‘‘इसलिये जो उस के द्वारा परमेश्वर के पास आते है .....पूरा उद्धार कर सकता है.....’’
- इब्रानियों 7:25

यीशु ने कहा,’’.....जो कोई मेरे पास आएगा, उसे मैं कभी न निकालूंगा।’’
- यूहन्ना 6:37

3. अपने पापों का अंगीकार करिये ।
(अंगीकार का अर्थ है ''पापों से क्षमा मांगना।'')

''इसलिये, मन फिराओ.....जिस से प्रभु के सन्मुख से विश्रान्ति के दिन आएं ।''
-प्रेरितों के काम 3:9

''प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देरी नहीं करता.....सब को मन फिराव का अवसर मिले ।'' - 2 पतरस 3:9

4.अपने पापों को स्वीकार करो ।

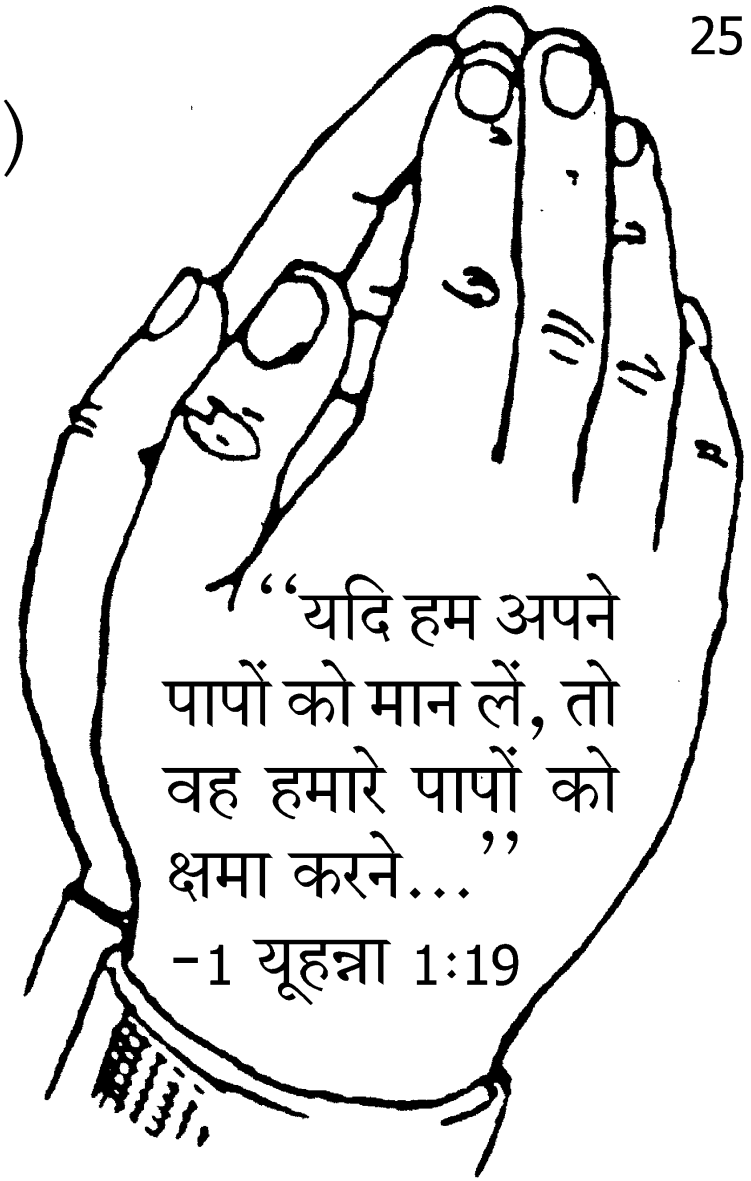

नीचे दी हुई लाईनों में 1 यूहन्ना 1:9 की आयतें लिखिये जो कि पृष्ठ 25 पर प्रार्थना करते हाथों पर लिखी है।

5. अपने पापों को छोड़ दो।
(छोड़ने का अर्थ है त्यागना)

"जो अपने अपराध छिपा रखता है, उसका कार्य सुफल नही होता, परन्तु जो उनको मान लेता और छोड़ भी देता है, उस पर दया की जायेगी।"-नीतिवचन 28:13

"बुराई को छोड़ और भलाई करः और तू सर्वदा बना रहेगा।"-भजन संहिता 37:27

6.यीशु मसीह पर विश्वास करिये।

''यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे ..... तो तू निश्चय उद्धार पाएगा।''

- रोमियों 10:9

क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है.....ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे।''

- इफिसियों 2:8,9

''उन्हों ने कहा, प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा।''

-प्रेरितों के काम 16:31

7. यीशु को अपने हृदय और जीवन में स्वीकार कीजिये।

सिर्फ आप अपने हृदय का द्वार खोलकर यीशु को अन्दर आने के लिये आमंत्रित कर सकते है। यीशु ने कहा, "देख, में द्वार पर खड़ा खटखटाता हूँःयदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूंगा, और वह मेरे साथ।" -प्रकाशितवाक्य 3:20

"परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उस ने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं।"

- यूहन्ना 1:12

एक प्रार्थना

यदि आपने पहले कभी प्रार्थना नहीं की और अब प्रार्थना में सहायता चाहते है तो आप नीचे लिखी प्रार्थना को एक मार्गदर्शक के रूप में ले सकते हैः

प्रिय प्रभु यीशु

मैं आपका धन्यवाद करता हूँ कि मेरे पापों के लिये आप स्वयं क्रूस पर बलिदान हुए। मेरे सभी गुनाहों के लिये मैं क्षमा मांगता हूँ मै चाहता हूँ कि आप मेरे हृदय में आएं और सदा वास करें। मैं विश्वास करता हूँ कि आज से आपने मेरे हृदय को शुद्ध किया है। मैं आपको अपना उद्धारकर्ता और प्रभु ग्रहण करता हूँ।

-यीशु के नाम में, आमीन।

यदि यीशु आपके हृदय में है तो आप सुरक्षित हैं

“.....परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया हैः और यह जीवन उसके पुत्र में है। जिसके पास पुत्र है, उसके पास जीवन है.....” - 1 यूहन्ना 5:11,12

“.....जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजनेवाले की प्रतीति करता है.....वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है।” - यूहन्ना 5:24

शरीर से अलग होकर आप प्रभु के साथ वास करते है (2 कुरिन्थियों 5:8)। “.....मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है।” - कुलुस्सियों 1:27

यदि आपने प्रभु से अपने पापों की क्षमा मांगी है, और आप विश्वास करते है, प्रभु यीशु मसीह ही आपका उद्धारक है, तो नीचे अपना नाम लिखिएः

बाइबल की आयतों को ध्यान से हर रोज़ पढ़िए (परमेश्वर का वचन) और उन वचनों पर मनन कीजिये जो आपकी सहायता करते है । (कई इस छोटी पुस्तिका में है ।)

"हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है ।"

-2 तीमुथियुस 3:16

यीशु से प्रार्थना द्वारा आप किसी भी वक्त बात कर सकते हैं

हमारे जीवन की हर अच्छी बात के लिये हमको यीशु धन्यवाद देते है। उसकी महिमा करो जो सने आपके लिये और आपकी आत्मा को बचाया है। अपनी किसी भी आवश्यकता के लिये उससे प्रार्थना करो यीशु के नाम में प्रार्थना करो ।

“.....यदि हम उस की इच्छा के अनुसार कुछ मांगते है, तो वह हमारी सुनता है।” - 1 यूहन्ना 5:14

“.....यदि पिता से कुछ मांगोगे, तो वह मेरे नाम से तुम्हें देगा।” - यूहन्ना 16:23

“.....एक दूसरे के लिये प्रार्थना करो.....” - याकूब 5:16

“.....अपने बैरियों से प्रेम रखो और अपने सतानेवालों के लिये प्रार्थना करो ।” - मत्ती 5:44

प्रार्थना जो यीशु ने अपने शिष्यों को सिखाई

(शिष्य का अर्थ है जो यीशु का अनुकरण करे)

यीशु ने अपने शिष्यों से कहा कि इस रीति से प्रार्थना किया करोः

> ‘‘हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में हैः तेरा नाम पवित्र माना जाए ।तेरा राज्य आएः तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो। हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दे, और जिस प्रकार हम ने अपने अपराधियों को क्षमा किया है, वैसे ही तू भी हमारे अपराधों को क्षमा कर । हमें परीक्षा में न ला, परन्तु बुराई से बचाः क्योंकि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरे ही है। आमीन।’’
>
> -मत्ती 6:9-13

इस प्रार्थना को याद कीजिये। विश्वासी इसे साथ बैठकर बोलते हैं ।

प्रभु की दस आज्ञाएं जो हमें बताती है कि किस प्रकार जीवन बिताना चाहिये
(निर्गमन, अध्याय 20)

पहली चार आज्ञाएं परमेश्वर से प्रेम के प्रति है

1. ''तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना।''
2. ''तू अपने लिये कोई मूर्ति खोदकर न बनाना .....तू उनको दण्डवत न करना, और न उनकी उपासना करना।''
3. ''तू अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना।''
4. ''तू विश्रामदिन को पवित्र मानने के लिये स्मरण रखना।''

अंतिम छः आज्ञाएं मनुष्य से प्रेम के प्रति है ।

5. ‘‘तू अपने पिता और अपनी माता का आदर करना।’’
6. ‘‘तू खून न करना।’’
7. ‘‘तू व्यभिचार न करना ।’’ (शारीरिक संबंध में पति - पत्नी की अविश्वासयोग्यता)
8. ‘‘तू चोरी न करना।’’
9. ‘‘तू किसी के विरुद्ध झूठी साक्षी न देना।’’
10. ‘‘तू किसी के घर का लालच न करना.....।’’

परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने से आपकी प्रार्थना का उत्तर मिलेगा

‘‘और जो कुछ हम मांगते है, वह हमें उससे मिलता हैः क्योंकि हम उसकी आज्ञाओं को मानते हैः और जो उसे भाता है वही करते हैं।’’ -1यूहन्ना 3:22

दो सबसे बड़ी आज्ञाएं

परमेश्वर से प्रेम

1. ‘‘उस ने उस से कहा, तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख। बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है।’’
- मत्ती 22:37,38

मनुष्य से प्रेम

2. ‘‘और उसी के समान यह दूसरी भी है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।’’
-मत्ती 22:39

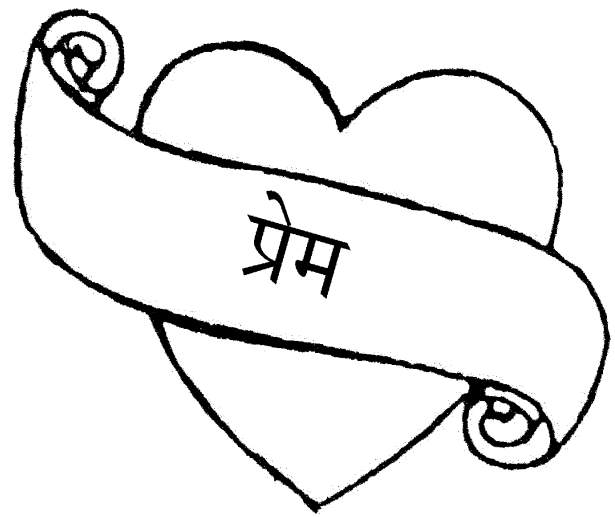

सारी दस आज्ञाओं (पेज 34 और 35) का सार इन दो बड़ी आज्ञाओं में है।

प्रेम सबसे बड़ा है

बड़ा ‘‘प्रेम का अध्याय’’

(1कुरुन्थियों 13ः1-8,13)

यदि मैं मनुष्यों और स्वर्गदूतों की बोलियां बोलूं, और प्रेम न रखूं, तो मैं ठनठनाता हुआ पीतल, और झनझनाती हुई झांझ हूँ, 2. और यदि मैं भविष्यद्वाणी कर सकूं, और सब भेदों और सब प्रकार के ज्ञान को समझूं, और मुझे यहां तक पूरा विश्वास हो, कि मैं पहाड़ों को हटा दूं, परन्तु प्रेम न रखूं, तो मैं कुछ भी नही, 3 और यदि मैं अपनी सम्पूर्ण संपति कंगालों को खिला दूं, या अपनी देह जलाने के लिये दे दूं, और प्रेम न रखूं, तो मुझे कुछ भी लाभ नही। 4.प्रेम धीरजवन्त है, और कृपालु हैः प्रेम डाह नहीं करताः प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता, और फूलता नही ।

5. वह अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता। 6.कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है। 7. वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है। 8. प्रेम कभी टलता नहीः भविष्यद्वाणियां हों, तो समाप्त हो जाएंगीः भाषाएं हों, तो जाती रहेंगीः ज्ञान हो, तो मिट जाएगा। 13. पर अब विश्वास, आशा, प्रेम ये तीनों स्थाई हैं, पर इन में सब से बड़ा प्रेम है।

परमेश्वर प्रेम है

‘‘.....परमेश्वर प्रेम हैः और जो प्रेम में बना रहता है, वह परमेश्वर में बना रहता हैः और परमेश्वर उस में बना रहता है।’’ - 1 यूहन्ना 4:16

यीशु चाहता है कि आप उसकी साक्षी दें

(घर में, स्कूल में, कहीं भी)

यीशु ने कहा, "....अपने घर जा कर अपने लोगों को बता, कि तुझ पर दया करके प्रभु ने तेरे लियें कैसे बड़े काम किए है।"

- मरकुस 5:19

परमेश्वर के सच्चे बेटों को किस प्रकार पहाचाना जा सकता है

‘‘सो उन के फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे।’’ - मत्ती 7:20

‘‘पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम है.....’’ - गलतियों 5:22,23

परमेश्वर के सच्चे बेटे दूसरों को क्षमा करते है

‘‘इसलिये यदि तुम मनुष्य के अपराध क्षमा करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा।’’ - मत्ती 6:14

7. कार्यों से प्रभु घृणा करता है

‘‘अर्थात् घमण्ड से चढ़ी हुई आंखें, झूठ बोलनेवाली जीभ और निर्दोष का लोहू बहानेवाले हाथ, अनर्थ कल्पना गढ़नेवाला मन, बुराई करने को वेग दोड़नेवाले पांव, झूठ बोलने वाली साक्षी और भाईयों के बीच में झगड़ा उत्पन्न करनेवाला मनुष्य।’’ - नीतिवचन 6:17-19

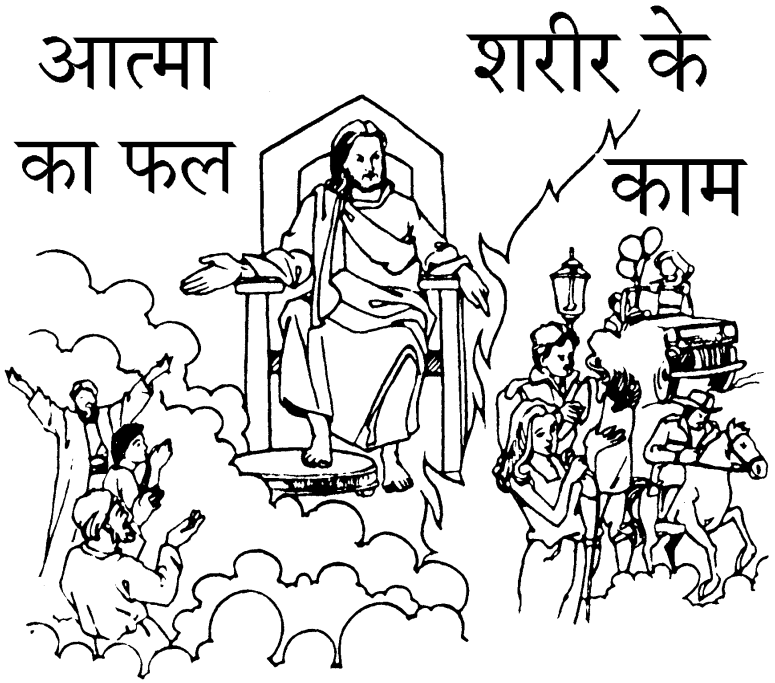

शरीर के कार्यः

“शरीर के काम तो प्रगट है, अर्थात - तू व्यभिचार, गन्दे काम, लुचपन। मूर्ति पूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म, डाह, मतवालापन, लीलाक्रीड़ा, और इन के ऐसे और काम है.....ऐसे काम करने वाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे,” - गलतियों 5:19-21

“.....न पुरुषगामी.....न चोर.....न लोभी.....” - 1 कुरिन्थियों 6:9

यीशु आपको आत्मा से परिपूर्ण करे और आपको शुद्ध करे “और तुम में से कितने ऐसे ही थे, परन्तु तुम प्रभु यीशु मसीह के नाम से और हमारे परमेश्वर के आत्मा से धोए गए, और पवित्र हुए और धर्मी ठहरे।” - 1 कुरिन्थियों 6:11

नरक एक वास्तविक जगह

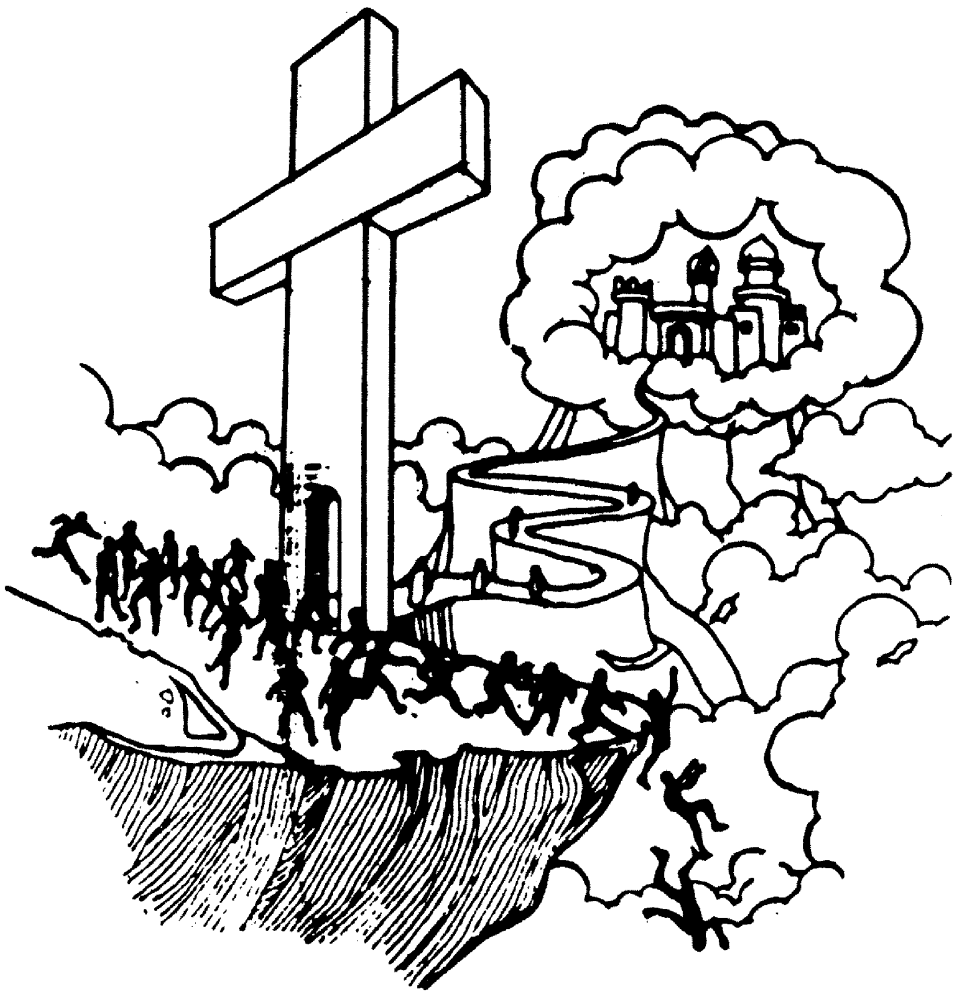

(पढ़िए लूका 16:19-26)

प्रभु यीशु में विश्वास करिये । वह आपका नाम जीवन की पुस्तक में लिखेगा ।

"और जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में डाला गया ।"

- प्रकाशितवाक्य 20:15

‘‘.....परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया हैः और यह जीवन उसके पुत्र में है।’’
- 1 यूहन्ना 5:11

‘‘क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।’’
- रोमियों 6:23

‘‘जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका हैः परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है।’’
- यूहन्ना 3:36

‘‘यीशु ने उस से कहा, मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूँःबिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता। ’’
- यूहन्ना 14:6

स्वर्ग एक वास्तविक जगह

प्रकाशितवाक्य 21 अध्याय में यूहन्ना का दर्शन जिसमें उसने एक नया स्वर्ग और एक नई धरती देखी ।

‘‘और वह उन की आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा.....पहिली बातें जाती रहीं..... मैं सब कुछ नया कर देता हूँः फिर उस ने कहा, कि लिख ले, क्योंकि ये वचन विश्वास के योग्य और सत्य हैं।’’

- प्रकाशितवाक्य 21:4,5

यूहन्ना ने पवित्र नगर भी देखा, नया यरूशलेम जो कि स्वर्ग से नीचे आ रहा है,

‘‘.....और नगर ऐसे चोखे सोने का था, जो स्वच्छ कांच के समान हो, और उस नगर की नेवें हर प्रकार के बहुमोल पत्थरों से संवारी हुई थी.....’’

-प्रकाशितवाक्य 21:18,19

‘‘तुम्हारा मन व्याकुल न हो, तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो मुझ पर भी विश्वास रखो। मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान है, यदि न होते, तो मैं तुम से कह देता क्योंकि मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूँ।’’

- यूहन्ना 14:1-3

यह सूसमाचार दूसरों को भी सुनाओ

यीशु ने कहा, ‘‘और उस ने उन से कहा, तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो।’’ - मरकुस 16:15

‘‘.....और बुद्धिमान मनुष्य लोगों के मन को मोह लेता है।’’

- नीतिवचन 11:30

परमेश्वर का अपने पुत्रों के प्रति वचन

“.....मैं तुझे कभी न छोड़ूंगा, और न कभी तुझे त्यागूंगा।” -इब्रानियों 13:5

“क्योंकि वह अपने दूतों को तेरे निमित आज्ञा देगा, कि जहां कहीं तू जाए वे तेरी रक्षा करे।” -भजन संहिता 91:11

“.....और कोई उन्हें पिता के हाथ से छीन नहीं सकता।” - यूहन्ना 10:29

“.....और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूँ” - मत्ती 28:20

“जो दुःख तुझको झेलने होंगे, उन से मत डर .....प्राण देने तक विश्वासी रहः तो मैं तुझे जीवन का मुकुट दूंगाः - प्रकाशितवाक्य 2:10

“.....ज्योंही मैं अन्धकार में पड़ूंगा त्योंही यहोवा मेरे लिये ज्योति का काम करेगा।” - मीका 7:8

“मुझ से प्रार्थना कर और मैं तेरी सुनकर.....” -यिर्मयाह 33:3

यीशु मसीह दुबारा आ रहे हैं

हर व्यक्ति मृतकों में से जी उठेगा।

“.....वइ समय आता है, कि जितने कब्रों में है, उसका शब्द सुनकर निकलेंगे, जिन्हों ने भलाई की है वे जीवन के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे और जिन्हों ने बुराई की है वे दंड के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे।” - यूहन्ना 5:28,29

यीशु में मृत पहले जी उठेंगे

“तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे, उन के साथ बादलों पर उठा लिये जाएंगे, कि हवा में प्रभु से मिलें, और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे, सो इन बातों से एक दूसरे को शान्ति दिया करो।” -1 थिसलुनीकियों 4:17

“.....जागते और प्रार्थना करते रहो: क्योंकि तुम नहीं जानते कि वह समय कब आएगा।” - मरकुस 13:33

यीशु किस प्रकार आयेंगे

“देखो, वह बादलों के साथ आनेवाला हैः और हर एक आंख उसे देखेगी.....” -प्रकाशितवाक्य 1:7

झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्ता से सावधान।

“.....कोई तुम से कहे, कि देखो, मसीह यहां हैः या वहां है तो प्रतीति न करना.....वे तुम से कहें, देखो, वह जङ्गल में है, तो बाहर न निकल जानाः देखो, वह कोठरियों में है, तो प्रतीति न करना।”-मत्ती 24:23-26

यीशु जल्दी ही मेघों पर सवार होकर आयेंगे

“क्योंकि जैसे बिजली पूर्व से निकलकर पश्चिम तक चमकती जाती है, वैसा ही मनुष्य के पुत्र का भी आना होगा ...पृथ्वी के सब कुलों के लोग छाती पीटेंगेः और मनुष्य के पुत्र को बड़ी सामर्थ और एश्वर्य के साथ आकाश के बादलों पर आते देखेंगे।”

- मत्ती 24:27-30

चरवाहे का गीत

(भजन संहिता 23)

1.यहोवा मेरा चरवाहा है, मुझे कुछ घटी न होगी। 2.वह मुझे हरी हरी चराईयों में बैठाता हैः वह मुझे सुखदाई जल के झरने के पास ले चलता हैः 3 वह मेरे जी में जी ले आता है। धर्म के मार्गों में वह अपने नाम के निमित्त मेरी अगुवाई करता है।

4. चाहे मैं घोर अन्धकार से भरी हुई तराई में होकर चलूं, तौभी हानि से न डरूंगाः क्योंकि तू मेरे साथ रहता हैः तेरे सोंटे और तेरी लाठी से मुझे शान्ति मिलती है।

5. तू मेरे सतानेवालों के सामने मेज़ बिछाता हैः तू ने मेरे सिर पर तेल मला है, मेरा कटोरा उमण्ड रहा है। 6.निश्चय भलाई और करुणा जीवन भर मेरे साथ साथ बनी रहेंगीः और मैं यहोवा के धाम में सर्वदा बास करुंगा।

मुफ्त - बेचने के लिए नहीं

Read booklets online or by App
www.wmp-readonline.org

www.wmpress.org